कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, मई 2026 | वर्ष 4, अंक 31, पृष्ठ 4





दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष होने के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में राज्यसभा के उपसभापति एवं मुख्य अतिथि हरिवंश जी का स्वागत प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने किया (बाएं), अतिथि के साथ मुख्य वक्ता प्रो. राममोहन पाठक, हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार के साथ पुरस्कृत किए गए विद्यार्थी (बाएं)।

दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष होने के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

हमें 'उदन्त मार्तण्ड' की तरह हितैषी बनना होगा : हरिवंश

आयुष प्रजापति/आलोक यादव

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता में पं युगल किशोर शुक्ल की स्मृति हम पर गहरा प्रभाव डालती है। हमारे पुरखा संपादकों की कुर्बानी हमें यश और सम्मान दिलाती है। पत्रकारिता का इतिहास हमें इसका भविष्य बनाने की ताकत देता है। हमें 'उदन्त मार्तण्ड' की तरह हितैषी बनना होगा। 'प्रताप' पत्र की तरह लोक जागरण के लिए काम करना होगा। इस दिशा में विकसित भारत की संकल्पना इसे और आगे लेकर जाएगी। इससे हम भारत का नवनिर्माण करेंगे। इसके लिए हमें सचेत रहना होगा। देश की अर्थव्यवस्था, स्वस्थ ऊर्जा और डिजिटल क्रांति के प्रति अपना योगदान देना होगा। यही अवधारणा विकसित भारत की सार्वभौमिक सत्यता को दर्शाती है। ऐसे में अगर हम समस्या का समाधान नहीं ढूंढेंगे तो हमारा भविष्य बेहतर नहीं होगा। यह बात राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में 14 मार्च 2026 को कही।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष होने के उपलक्ष्य में 'भारत बोध और हिंदी पत्रकारिता रू 200 वर्षों की यात्रा' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि हरिवंश ने हिंदी पत्रकारिता और विकसित भारत 2047 विषय पर बात रखी। उन्होंने चाणक्य नीति को संदर्भित करते हुए विकसित भारत की दिशा में अर्थ की मजबूती पर जोर दिया। साथ ही 'उदन्त मार्तण्ड' के कलकता से निकलने की पीछे की वजह को रेखांकित किया। उपसभापति ने कहा कि देश की राजधानी देश की दिशा और दशा तय करती है। 'उदन्त मार्तण्ड' हिंदुस्तानियों के हित के हेत के लिए निकाला गया था।

उपसभापति हरिवंश ने कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' पत्र के बारे में बताते हुए गणेश शंकर विद्यार्थी की पहली संपादकीय का जिक्र किया। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह करते हुए कहा कि सभी को उनका पहला संपादकीय अवश्य पढ़ना चाहिए। साथ ही बाबूराव विष्णु पराड़कर की पत्रकारिता का उल्लेख किया। उन्होंने अपने लिखे हुए एक लेख 'भारत का भविष्य' पर बात की। उनका कहना है कि भारत डिजिटल, वैक्सीन, रेल, मेट्रो नेटवर्क, डीबीटी, रक्षा क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बन रहा है। सवाल–जवाब सत्र में पत्रकारिता के विद्यार्थी आलोक यादव और आयुष ने उपसभापति से पत्रकारिता से जुड़े सवाल किए। शिक्षक डॉ. अटल तिवारी ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विवि

- **पुरखा संपादकों की कुर्बानी हमें यश और सम्मान दिलाती है : उपसभापति**
- **गणेश शंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' में लिखा पहला संपादकीय पढ़ना चाहिए**

का एकमात्र महाविद्यालय है, जिसने हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्षों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की है। इससे पहले कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि हरिवंश को अंगवस्त्र से सम्मानित किया। साथ ही संगोष्ठी में आए अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उपसभापति के सौम्य स्वभाव और जिम्मेदारी का उल्लेख किया। संगोष्ठी के पहले दिन शोध पत्र वाचन करने वाले विद्यार्थी मुख्य अतिथि हरिवंश के हाथों से सम्मानित हुए। संचालन आस्था त्रिपाठी ने किया।

समापन सत्र से पहले 'भारत बोध और राष्ट्र चेतना की हिंदी पत्रकारिता' विषयक सत्र में पंजाब विश्वविद्यालय से आए वक्ता डॉ. किंशुक पाठक ने कहा कि जो समुद्र में दीप स्तंभ होता है उस तरह से 'उदन्त मार्तण्ड' है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आए प्रो. धनंजय चोपड़ा ने कहा कि एक कनपुरिया बंगाल में जाकर अखबार निकालता है, ऐसा क्यों है, दरअसल ब्रिटिश शासन ने हमारी संस्कृति और भाषा पर वार किया था। यही सोच कर पंडित युगल किशोर ने सोचा होगा कि हम हिंदी में अखबार निकालेंगे। इसी सोच के तहत उन्होंने 30 मई 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन शुरू किया था। सत्र की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली विवि, राष्ट्रीय सम्बन्ध के डीन प्रो. अनिल राय ने कहा कि कलकत्ता से इसलिए पत्र निकले, क्योंकि उस समय वहीं पर छापाखाना मौजूद था। उन्होंने भारतेंदु युग से लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन और उस समय की पत्रकारिता का जिक्र किया। सत्र का संचालन अंशिका वर्मा और दिव्या ने किया तो धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजेश गौतम ने किया। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. देवेन्द्रनाथ तिवारी और डॉ. विशाल शर्मा ने किया तो डॉ. सीमा भारती, डॉ. निशा सिंह, डॉ. श्वेता आर्या और रेडियो तरंग की फरजीन सुल्तान ने उसे सफल बनाया। इस मौके पर हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. एनी रे, डॉ. गोपाल यादव, डॉ. श्यामजीत यादव सहित कई विभागों के शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

सत्य और तथ्य का संदेश देता है...

उत्कर्ष कुमार/नंदनी वार्ष्णेय

- **महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्षों की यात्रा पर हुआ मंथन**
- **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन तीनों सत्रों में वक्ताओं ने की चर्चा**

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्षों की यात्रा हमें अपनी अस्मिता का स्मरण कराती है। 'उदन्त मार्तण्ड' सत्य और तथ्य का संदेश देता है। विद्रोह और विरोध पत्रकारिता के संस्कार हैं। ऐसे में समाचारों और विचारों का विस्तार हो रहा है। कंटेन्ट के क्षरण ने हिंदी पत्रकारिता और भारतबोध को प्रभावित किया है। हमें जांच, पुनः जांच और प्रति परीक्षण करते रहना चाहिए। यही पत्रकारिता है और इसी का जीवन लंबा होगा। यह बातें दक्षिण भारत हिंदी प्रचार संस्था चेन्नई के पूर्व कुलपति प्रो. राम मोहन पाठक ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में 13 मार्च 2026 को कही। प्रो. राम मोहन पाठक ने 'हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक विरासत, वर्तमान और भविष्य की दिशा' विषय पर कहा कि मानव जीवन में सांस और संचार का अटूट रिश्ता है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विकसित भारत का लक्ष्य मंगल कारी और हितकारी हो, इसी दिशा में हमारी को. शिश रहनी चाहिए। उन्होंने आदर्श पत्रकार और पत्रकारिता की चुनौतियों पर कहा कि सत्य का संधान करना और तथ्य आधारित होना पत्रकारिता की पहली शर्त है।

प्रसार भारती के पूर्व महानिदेशक लीलाधर मंडलोई ने कहा कि 200 वर्षों की पत्रकारिता हमारे पुरखों की दौलत है। इस यात्रा में कई युग और चरण आते हैं। लेकिन भारतेन्दु युग की पत्रकारिता सच्ची पत्रकारिता है। दिल्ली विवि के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सुधा सिंह ने भारतबोध के अर्थ और स्वरूप को बताते हुए कहा कि भारत बोध भारत की जीवनशैली और राष्ट्र के रूप में एकता की परिभाषा, इन सब में विविधता लिए हुए है। हमें अपनी संस्कृति, इतिहास और अस्मितामूलक पहचान की खोज आधुनिक काल के आगमन के साथ दिखाई देता है। वरिष्ठ पत्रकार और लेखक प्रियदर्शन ने कहा कि भारतीय पत्रकारिता की आंख जेलों में खुली है। इस बीच कई एक्ट और कानून आए। गैगिंग एक्ट, वर्नाक्यूलर एक्ट से लेकर सरकारी गोपनीयता एक्ट तक। इस दौरान भी हिंदी पत्रकारिता बढ़ती गढ़ती रही। इससे पहले हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने 'उदन्त मार्तण्ड' के इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि पत्रकारिता का धर्म सत्य है।

दूसरा सत्र 'डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता, सामाजिक परिवर्तन एवं नवाचार' विषय पर इलाहाबाद विवि के प्रो. धनंजय चोपड़ा, प्रो. बिजेंद्र कुमार, वरिष्ठ पत्रकार अनिल पांडे ने अपनी बात रखीं। तीसरे सत्र में इंडिया है. बिटेट सेंटर के अध्यक्ष प्रो. केजी सुरेश ने हिंदी पत्रकारिता में माखनलाल चतुर्वेदी, गांधी, अंबेडकर और तिलक की पत्रकारिता के योगदान को बताया। प्रो. कृपा शंकर चौबे ने उदंत मार्तंड और विशाल भारत पत्रिका के बारे में बताया। खुशी प्रजापति ने संचालन किया। डॉ. गोपाल यादव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। संचालन खुशी वशिष्ठ, आलोक और स्मृति ने किया। हिंदी विभाग के डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. गोपाल यादव, डॉ. सीमा भारती ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस मौके पर प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. निशा सिंह, डॉ. श्वेता आर्या आदि मौजूद रहे।



हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पर 'सम्भव' का विशेषांक

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में विभाग की अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'सम्भव' के जनवरी–जून 2026 अंक का विमोचन किया गया। यह अंक हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्ष की यात्रा पर विशेषांक के रूप में निकाला गया है। अंक की छात्र संपादक विभाग की तृतीय वर्ष की छात्रा अंशिका वर्मा हैं तो उपसंपादक की भूमिका द्वितीय वर्ष की छात्रा भारती बल ने निभाई है। विशेषांक का विमोचन वरिष्ठ पत्रकार प्रो. राम मोहन पाठक, वरिष्ठ लेखक लीलाधर मंडलोई, वरिष्ठ पत्रकार प्रियदर्शन, प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार और अंक की छात्र संपादक अंशिका वर्मा ने किया।

क्रिकेट का नया युग IPL

इंडियन प्रीमियर लीग ने भारतीय क्रिकेट के स्वरूप को ही नहीं बदला बल्कि वैश्विक खेल बाजार की पूरी परिभाषा बदल कर रख दी है। आज जब हम आईपीएल के 19वें संस्करण के बीच हैं तो स्पष्ट है कि यह केवल 22 गज की पट्टी पर खेला जाने वाला खेल मात्र नहीं रह गया। यह तकनीक, मनोरंजन और व्यापार का एक ऐसा अनूठा संगम बन चुका है, जिसने पारंपरिक जेंटलमैन गेम को एक आधुनिक ग्लैडिएटर शो में तब्दील कर दिया है।

आईपीएल ने भारतीय क्रिकेट को जो सबसे बड़ी सौगात दी है, वह है आत्म. विश्वास। अब छोटे शहरों और गांवों से आने वाले खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए वर्षों का इंतजार नहीं करना पड़ता। रिंकू सिंह या यशस्वी जायसवाल जैसे नाम इसी मंच की देन हैं। विदेशी खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने से भारतीय युवाओं का मानसिक स्तर उस ऊंचाई पर पहुंच गया है, जहां वे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के दबाव को खेल–खेल में झेल जाते हैं। हालांकि इस चकाचौंध के पीछे कुछ गंभीर प्रश्न भी खड़े होते हैं। बढ़ता हुआ वर्कलोड खिलाड़ियों की फिटनेस के लिए चुनौती बन रहा है। साथ ही इम्पैक्ट प्लेयर जैसे नियमों ने खेल के पारंपरिक संतुलन को कितना प्रभावित किया है, क्या हम केवल चौके–छक्कों के शोर में खेल की तकनीक को पीछे छोड़ रहे हैं? तमाम आलोचनाओं के बावजूद, आईपीएल आज भारत की सॉफ्ट पावर का एक बड़ा प्रतीक है। यह वैश्विक स्तर पर भारत की आयोजन क्षमता और आर्थिक शक्ति का प्रदर्शन है और क्रिकेट प्रेमियों का मनोरंजन भी। फिलहाल इस आईपीएल सीरीज के बीच 'कैम्पस कनेक्ट' का मई अंक आप सभी के सामने हाजिर है।...



शिवम

स्वच्छ ऊर्जा से होगा सुरक्षित भविष्य

हमारे पास एनर्जी है, लेकिन उसका वितरण उचित नहीं है : डॉ. नवीन राज

आप एक पर्यावरणविद् हैं और आपका ऊर्जा सुरक्षा तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर काफी काम रहा है। ऐसे में हमारे श्रोता जानना चाहेंगे कि ऊर्जा सुरक्षा क्या है?

देखिए, ऊर्जा का तो पता ही है कि ऊर्जा के बिना हम रह नहीं सकते। पिछले 200 वर्षों में जो हमारी पूरी प्रगति और विकास हुआ है, उसका मूल आधार ऊर्जा ही रहा है। अब ऊर्जा हम कैसे प्राप्त कर रहे हैं, कितनी मात्रा में कर रहे हैं और क्या ऊर्जा सबको उपलब्ध है या नहीं? आज की तारीख में कुछ जगहों पर हम ऊर्जा सम्पन्न हैं। ऊर्जा का मतलब सिर्फ तेल और गैस नहीं है, ऊर्जा का मतलब बिजली भी है। बहुत सारे गांव ऐसे हैं जहां पर बिजली नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारे पास ऊर्जा तो है, लेकिन उसका वितरण उचित नहीं है। ऐसे में सबसे पहले, जिसे हम कहते हैं कि हमारे पास ऊर्जा होनी चाहिए वह अपने देश के लिए पर्याप्त हो और फिर उसकी पहुंच सबके पास हो। हमारी पूरी जनसंख्या है 140 करोड़, जब तक सबके पास बराबर मात्रा में न्यूनतम ऊर्जा नहीं होगी, तब तक हम इसे पूर्ण नहीं मानेंगे। इसके साथ पर्यावरणीय स्थिरता को जोड़ना होगा, क्योंकि अगर हम ऊर्जा लेकर उसे ऐसे ही व्यर्थ करते रहे और हमारा अपनी जलवायु लगातार खराब होती रहे, जैसी दिल्ली–एनसीआर में स्थिति है। हम लोग गाड़ियां खरीद रहे हैं, ईंधन का उपयोग कर रहे हैं, कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न कर रहे हैं, ग्रीनहाउस गैसें उत्पन्न कर रहे हैं। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है और हमारी क्रय क्षमता बढ़ रही है, यह सब भी बढ़ता जा रहा है। अगर हम इन तीनों चीजों को मिला लें तो पर्याप्त ऊर्जा होनी चाहिए, हमारे देश में सबके पास ऊर्जा की न्यूनतम मात्रा होनी चाहिए और हर ऊर्जा के उपयोग या उत्पादन के साथ पर्यावरणीय स्थिरता भी बनी रहनी चाहिए।

भारत पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय रूप से विविध देश है। ऐसे में हमारे पास जो प्राकृतिक संसाधन हैं, उनका उपयोग हम नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कैसे कर सकते हैं?

इंडिया हमारी एक ऐसी कंट्री है जिसके बारे में हम वैदिक काल से कह सकते हैं कि यह हमारे लिए एक धन्य देश है, क्योंकि हम लोग तीन तरफ से घिरे हुए हैं और हमारा लगभग दो–तिहाई हिस्सा समुद्री क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। वहां से हमारे पास सुरक्षा है, हमारे पास पर्याप्त नदियां हैं, ताजा पानी है, हमारे पास कृषि है। सस्टेन करने के लिए क्या चाहिए? और सस्टेन का मतलब है खाना–पीना। वह हम खुद उत्पन्न कर सकते हैं। लेकिन अगर हमें विकसित होना है, हमें अन्य देशों की तरह दूसरी चीजों में भी आगे बढ़ना है और भविष्य में अपनी सामर्थ्य तथा अपना स्थान मजबूत करना है तो हमें अन्य देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी। हमारे पर्यावरणीय कारक, जो न्यूनतम जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक हैं, वे तो पर्याप्त हैं। लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ियों की आगे की प्रगति के लिए हमें अपने देश से आगे भी देखना होगा। दूसरे देशों के पास जैसे अभी चल रहा है कि ऑनलाइन गैस हम पहले से ही ले रहे हैं। कहां से ले रहे हैं? हमारे पास जो भी उपकरण हैं और जितनी भी परमाणु विज्ञान से जुड़ी चीजें हैं, उनमें से ज्यादातर हम कहां से ले रहे हैं? चीन से ले रहे हैं। तो हमारी पारस्परिक निर्भरता केवल आत्मनिर्भर पर्यावरण व्यवस्था से पूरी नहीं हो रही। हमारे पास खनिज हैं, लेकिन कुछ खनिज ऐसे हैं जो बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं, जबकि कुछ खनिज ऐसे हैं जो बहुत आवश्यक हैं लेकिन हमारे पास नहीं हैं। यही भू–राजनीति है कि आप किस देश के साथ संबंध रखते हैं। जैसे वर्तमान में हमारा अमेरिका के साथ इतना मतभेद क्यों हो रहा है? क्योंकि हम रूसी तेल खरीद रहे हैं। अमेरिका चाहता है–हम उसका तेल खरीदें। हमें यह देखना है कि हमारे लिए क्या उपयुक्त है। कल को अगर हम मान लें कि रूस से लेना छोड़ दें और अमेरिका से खरीदने लगें। भविष्य में अमेरिका हमें निर्देश देने लगे कि हम नहीं देंगे तो हमें इधर से भी नहीं मिलेगा और उधर से भी नहीं मिलेगा। इसलिए हमें संतुलन बनाकर रखना होगा।

सर, आपने पेट्रोलियम सूक्ष्म जीव. विज्ञान पर भी काम किया है। वह क्या है और वह हमारे ऊर्जा क्षेत्र में किस प्रकार सहायक है?

पेट्रोलियम सूक्ष्म जीव विज्ञान में सूक्ष्म जीवों के दो पहलू होते हैं। एक वह जो हानिकारक होता है। जैसे बहुत सारे सूक्ष्म जीव हैं जो पेट्रोलियम उद्योग के लिए खतरनाक हैं। उदाहरण के लिए सल्फेट को कम करने वाले जीवाणु, जो पेट्रोलियम उद्योग में अधिक मात्रा में विकसित होते हैं और अधिक क्षरण करते हैं। अगर तेल शुद्ध होता है तो वह सल्फर मुक्त होता है, लेकिन कई बार ऐसा होता है कि पेट्रोलियम को विघटित करने वाले सल्फेट को कम करने वाले जीवाणु उसे खट्टे तेल में बदल देते हैं। खट्टे तेल का मतलब है एचटूएस। एक बार एचटूएस वहां आ गया तो हमारी हर चीज की लागत बढ़ जाती है। यह हो गया उसका हानिकारक प्रभाव। पेट्रोलियम सूक्ष्म जीव विज्ञान का एक लाभकारी प्रभाव भी है। लाभकारी प्रभाव यह है कि ये सूक्ष्म जीव अपने एंजाइम तंत्र और आनुवंशिक संरचना में बदलाव के माध्यम से इतने अनुकूलित हो जाते हैं कि वे हाइड्रोकार्बन को अपना कार्बन स्रोत बना लेते हैं। कई बार जैसे तेल फैल जाता है या हमारा तेल कहीं रिस कर मिट्टी में चला जाता है तो वह कहां जाएगा। हम उसे जला दें। अगर नहीं जलाया गया तो सबसे अच्छा तरीका यह है कि यह सूक्ष्म जीव उस हाइड्रोकार्बन को कार्बन डाइऑक्साइड में बदल देते हैं। कार्बन से अपनी कोशिकाएं बनाते हैं और अपनी वृद्धि के लिए उसका उपयोग करते हैं। इस तरह हाइड्रोकार्बन का एक बड़ा हिस्सा लाभकारी रूप से उपयोग हो जाता है। जैविक उपचार के माध्यम से समुद्र में समुद्री तेल प्रदूषण को नियंत्रित किया जाता है। यह सब सूक्ष्म जीवों के जरिए होता है। पेट्रोलियम सूक्ष्म जीव विज्ञान के दोनों पहलू तेल उद्योग में उपयोग किए जाते हैं।

क्या पर्यावरणीय स्थिरता के क्षेत्र में कोई नया शोध और दिशा है, जो हमारे भविष्य के लिए कारगर साबित हो सकती है?

स्थिरता और पर्यावरण में क्या है कि हम लोगों के लिए एक जो ग्रह स्तर है, जो हमारी स्थिरता के लिए प्रकृति द्वारा आवश्यक है, हम उसके कई मानकों को काफी हद तक पार कर चुके हैं। अब उसे नियंत्रित करना है और नियंत्रित कैसे करना है? इसके दो रास्ते हैं। एक हम जो उत्सर्जन कर रहे हैं, उन उत्सर्जनों को नियंत्रित करना है। दूसरा, जो नुकसान हम पहले ही कर चुके हैं, उसे कैसे कम किया जाए। उसे कम करने के लिए यह कार्बन को धरातल के नीचे संग्रहीत करने जैसी तकनीक की बात हो रही है, लेकिन अब भी बहुत बड़े स्तर पर इस तरह का कुछ नहीं हो रहा। फिलहाल हमारा पूरा ध्यान इस बात पर है कि हम अपने उत्सर्जनों को हर जगह पर कैसे न्यूनतम करें।

आपका तेल और प्राकृतिक गैस उद्योग के क्षेत्र में लंबा अनुभव रहा है। क्या इस दौरान कोई ऐसी रोचक या अप्रत्याशित खोज हुई है, जिसे आप रेडियो तरंग के श्रोताओं से साझा करना चाहेंगे?

हां, मैंने 80 के दशक में ज्वाइन किया था और सबसे बड़ी खोज बॉम्बे हाई की 77 में हुई थी। वास्तव में एजेंसीज जैसी कंपनी पहले जीएसआई का एक हिस्सा थी। फिर जैसे ही तेल और गैस अन्वेषण शुरू हुआ, यह एक अलग कंपनी बन गई। जब बॉम्बे हाई की खोज हुई, वह सबसे बड़ी खोज थी। उसके पहले हमारी गुजरात और असम में भी खोजें थीं, लेकिन यह सभी अब परिपक्व क्षेत्र हो गए हैं, इसलिए इनका उत्पादन कम हो गया है। हम लगातार खोज कर रहे हैं, अन्वेषण अभी भी चल रहा है। अभी सारा ध्यान अंडमान और निकोबार पर है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि हमें नए क्षेत्र मिलेंगे और तेल और गैस के नए भंडार प्राप्त होंगे।

सर, भविष्य के लिए क्या ऐसी कोई हरित प्रौद्योगिकी अथवा नवाचार हैं, जिन्हें आप देश के लिए खेल बदलने वाला मानते हों?

ग्रीन केमिकल्स जैसे हम लोग पहले बहुत ही क्रोमियम आधारित या भारी धातु आधारित बहुत सारे यौगिकों का उपयोग करते थे। इन रसायनों में हरित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी क्रांति आ चुकी है। अब यह ऐसे रसायनों से प्रतिस्थापित हो चुके हैं जो विश्व भर में उपलब्ध हैं, जिससे कम से कम हम अपने उत्पादन से होने वाले प्रदूषण को तो कम कर सकते हैं।



पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के डायरेक्टर ऑफ हाइड्रोकार्बन में ज्वाइंट हेड एनवायरनमेंट के रूप में कार्यरत *डॉ. नवीन राज* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस बीच उनसे भूविज्ञान विभाग की तृतीय वर्ष की छात्रा *प्रांजल शर्मा* ने भारत की तेजी से बढ़ती औद्योगिक और घरेलू ऊर्जा आवश्यकताओं के मद्देनजर सुरक्षित, स्वच्छ और प्रभावी ऊर्जा संसाधान जैसे बिन्दुओं पर बात की। उस बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए पेश हैं...

तरंग TARANG 90.0 FM

कथाकार प्रज्ञा को स्पंदन आलोचना सम्मान 2024

कई उपन्यास और कथा संग्रह की लेखिका हैं प्रज्ञा

मयंक कुमार

नई दिल्ली। 'कांधों पर घर', 'धर्मपुर लॉज' और 'गूदड़ बस्ती' जैसे महत्वपूर्ण उपन्यास रचने वाली कथाकार प्रज्ञा आलोचना विधा में भी सशक्त हस्तक्षेप करती रही हैं। इस हस्तक्षेप में मुख्य रूप से उन्होंने नाट्य आलोचना को केन्द्र में रखकर काम किया है। इसी काम को ध्यान में रखकर उन्हें पिछले दिनों स्पंदन आलोचना सम्मान 2024 से नवाजा गया है। स्पंदन संस्था की ओर से हर वर्ष आयोजित किया जाने वाला समारोह इस बार 21–22 फरवरी 2026 को भोपाल के राज्य संग्रहालय सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें कथाकार प्रज्ञा को आलोचना विधा का सम्मान देने के साथ कई अन्य लेखकों को दूसरी विधाओं में सम्मानित किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज में हिंदी की प्रोफेसर कथाकार प्रज्ञा विद्यार्थियों की चहेती शिक्षिका हैं। उनके व्यक्तित्व में शिक्षा, संवेदना और विचारों की गहराई का संगम देखने को मिलता है। वह विद्यार्थियों में सोचने, समझने और प्रश्न करने की क्षमता विकसित करने की पक्षधर रहती हैं।

कथाकार प्रज्ञा तीन दशकों से लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। तीन उपन्यासों के साथ उनके अब तक कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें 'मन्नत टेलर्स', 'तक़्सीम' जैसे संग्रह शामिल हैं तो नाट्य आलोचना में 'नुक्कड़ नाटक : रचना और प्रस्तुति', 'जनता के बीच : जनता की बात', 'नाटक से संवाद', 'नाटक : पाठ और मंचन' जैसी सात किताबें उन्होंने रची हैं। इसी के साथ बाल साहित्य में 'तारा की अलवर यात्रा' उनकी काफी चर्चित कृति रही है। सामाजिक सरोकारों पर उनकी 'आईने के सामने' शीर्षक से किताब है।

इस तरह से कथाकार प्रज्ञा ने कथा साहित्य के साथ–साथ बाल साहित्य, आलोचना और स्त्री विमर्श पर भरपूर कलम चलाई है। उनकी आलोचना में एक गहरी अंतर्दृष्टि और पैनी परख दिखाई देती है। विशेष रूप से स्त्री आलोचना को समृद्ध करने में प्रज्ञा जी के विशेष अवदान को सम्मान समारोह में सभी वक्ताओं ने रेखांकित किया। समारोह में वरिष्ठ कथाकार सूर्यबाला, चंद्रकान्ता, उर्मिला शिरीष, आइसेक्ट के संस्थापक और वरिष्ठ कथाकार संतोष चौबे, कथाकार पंकज सुबीर, मनीष वैद्य, आलोचक अरुण होता, वरिष्ठ कवि सुभाष राय के साथ बड़ी संख्या में लेखक, पाठक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

स्पंदन सम्मान से पहले भी प्रज्ञा जी को कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। इसमें भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय की ओर से 'तारा की अलवर यात्रा' को प्रथम पुरस्कार मिल चुका है। प्रतिलिपि डॉट कॉम का 2015 का कथा सम्मान मिल चुका है। इसी के साथ मीरा स्मृति पुरस्कार 2016 और महेंद्र प्रताप स्मृति कथा पुरस्कार 2019 भी उन्हें मिला है। कथाकार प्रज्ञा को मिले यह सम्मान बताते हैं कि उनकी लेखनी में किस तरह की विविधता है, आम आदमी से जुड़े मसलों को वह जिस तरह से अपने लेखन में शामिल करती हैं, वह एक तरह से पाठकों को बांध लेती हैं।



भोपाल में हुए दो दिवसीय समारोह में बड़ी संख्या में लेखक शामिल हुए।



महाविद्यालय के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के विशेष सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. जगबीर सिंह व प्रो. रवींद्र सिंह के साथ मौजूद प्राचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा का हम पर वरदान

- नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा आ रही है सामने : प्रो. जगबीर सिंह
- अनुसंधान, कला और साहित्य में परंपरा की अहम भूमिका है : प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

शिवम

नई दिल्ली। हम 88 साल के हो गए हैं, पर आज तक ऐलोपैथी दवा नहीं ली। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का मुझ पर वरदान है। तीन सौ साल पहले मैकाले ने मिनट ऑफ एजुकेशन लिखकर शिक्षा नीति तैयार की थी, जो तीन ई पर आधारित थी। इंग्लिश एजुकेशन और एमप्लॉयमेन्ट में अगर अंग्रेजी शिक्षा को ही हर जगह प्राथमिकता मिलेगी तो हिंदी, उर्दू, संस्कृत, इत्यादि कौन पढ़ेगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी किसी ने इसे बदलने को नहीं सोचा। अब जब नई शिक्षा नीति लागू हुई है तो भारतीय ज्ञान परंपरा जैसी पहल सामने आ रही है। यह बात 20 नंबवर 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के विशेष सत्र में मुख्य अतिथि और पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जगबीर सिंह ने कही।

इससे पहले रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने भारतीय ज्ञान परंपरा की नई शिक्षा नीति में भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसंधान, पौराणिक दर्शन, कला और साहित्य में अहम भूमिका निभा रही है। इस पहल को मजबूती प्रदान करने के क्रम में इक्कीस पुस्तकों का दिल्ली यूनिवर्सिटी के नॉर्थ कैम्पस में 20 नंबवर 2025 को होने वाले विमोचन की जानकारी भी दी। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर इस किताब को लेकर होने वाली परीक्षा की जानकारी दी, जिसकी इनाम राशि लाखों रुपए में रखी गई है।

मुख्य अतिथि दिल्ली विवि के पंजाबी विभाग के प्रो. रवींद्र सिंह ने कहा कि सिर्फ वर्तमान का समय शॉर्टकट का नहीं है, पौराणिक युग भी ऐसा रहा है। आप संस्कृत के श्लोक देखें। यह छोटे होते हैं, पर जैसे ही इनके भाव व्यक्त किए जाते हैं, यह ग्रंथ का रूप ले लेते हैं। उन्होंने पौराणिक ग्रंथों को केंद्रित करते हुए कहा कि ज्ञान कभी पुराना नहीं होता, खास कर जो वैज्ञानिक और तार्किक होता है। सत्र में केन्द्र के सह संयोजक डॉ. के.जी. त्यागी, सलाहकार प्रो. अर्चना गौड़, शिक्षक डॉ. बसंत मिश्रा, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार व डॉ. विशाल शर्मा मौजूद रहे।

आरक्षण में शिक्षा, राजनीति और संघर्षों पर सवाल

दीपक

नंई दिल्ली। 'आरक्षण' फिल्म आपको कोई आसान जवाब नहीं देगी। दुनिया काले और सफेद रंग में नहीं है। यह फिल्म याद दिलाती है कि हकीकत को तलाशना पड़ता है। अफवाहें तो घर बैठे पहुंच जाती हैं। फिल्म 'आरक्षण' के मसले पर आधारित है। यह राजनीतिक बहस से कहीं ज्यादा है। यह टकराव वाले आदर्शों, शिक्षा के खतरनाक व्यावसायीकरण और अपने विश्वास के लिए खड़े होने की वास्तविक व्यक्तिगत कीमत के बारे में एक मानवीय कहानी है। यह बात इक्वल अपारच्युनिटी सेल की एंकर आन्या कुमारी ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 30 सितम्बर 2025 को 'आरक्षण' फिल्म की स्क्रीनिंग के समय कही।

एंकर प्राची कुमारी ने बताया कि फिल्म 'आरक्षण' सब कुछ एक साफ सुथरे बंडल में नहीं बांधती। यह समाज को आईना दिखाती है। इसमें नीतियों और बहसों के केंद्र में स्थित दरारों, भावनाओं और व्यक्तिगत संघर्षों को दिखाया गया है। इस चर्चा से विद्यार्थियों को एक नई दृष्टि मिली। स्क्रीनिंग के दौरान इक्वल अपारच्युनिटी सेल के संयोजक डॉ. कुलदीप सिंह चौहान और सेल की सह संयोजिका सुश्री मेघना शर्मा मौजूद रहीं।



'आरक्षण' फिल्म की स्क्रीनिंग में विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया।

अगोरा में वाद–विवाद के चार प्रारूपों में दिखा हुनर

- आरएलएसी में आवाज का अ मल्टी फॉर्मेट डिबेट कॉम्पिटिशन का आयोजन
- राज मिश्रा प्रथम, यशवर्धन द्वितीय और आदित्य मिश्रा रहे तीसरे स्थान पर

समर्थ मिश्रा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की द इंग्लिश डिबेटिंग समिति आवाज ने 13 और 14 नवंबर 2025 को अ मल्टी फॉर्मेट डिबेट कॉम्पिटिशन का आयोजन किया। अगोरा 25 नाम से हुए इस आयोजन में वाद–विवाद के चार प्रारूप लिंकन–डगलस बहस, टाउन हॉल डिबेट, ऑक्सफोर्ड संसदीय और द वर्डिक्ट रखे गए। इसके निर्णायक मंडल में सक्षम मैग्गो, कृष्ण आनंद, आदित्य त्यागी और गोपाल कृष्णन शामिल रहे।

वाद–विवाद की शुरुआत टाउन हॉल डिबेट से हुई। इसमें प्रतिभागियों को अपने बिंदुओं को रेखांकित करने के लिए तीन मिनट का समय दिया गया। इसके बाद उनके लिए 15 मिनट का प्रश्न–उत्तर सत्र हुआ।

टाउन हॉल डिबेट में पहला स्थान राज मिश्रा, दूसरा स्थान अक्षिता और तीसरा स्थान कुमार अथर्व ने हासिल किया। टाउन हॉल डिबेट के बाद लिंकन–डगलस वाद–विवाद शुरू हुआ। लिंकन–डगलस में प्रथम स्थान पर आदित्य मिश्रा रहे और दूसरा स्थान देव ने प्राप्त किया। ऑक्सफोर्ड संसदीय में विजेताओं का चयन दर्शकों के वोट से कराया गया। ऑक्सफोर्ड संसदीय में प्रथम स्थान मेघा शर्मा, दूसरे स्थान पर केशव दीक्षित और तीसरे स्थान पर समंक प्रज्ञान रहे। अंतिम दिन वाद–विवाद की शुरुआत द वर्डिक्ट से हुई। वर्डिक्ट के विजेता राजशेखर रहे, जिसमें दूसरे और तीसरे स्थान पर क्रमशः यशवर्धन और आदित्य मिश्रा रहे। इस आयोजन के दौरान समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज, सह संयोजिका सुश्री सुप्रिया कामना सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे। समिति के पदाधिकारियों ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संचार की बारिकियों से रूबरू हुए विद्यार्थी

अंशु यादव

नई दिल्ली। अवलोकनात्मक वाक्य तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि मूल्यांकनात्मक वाक्य राय, भावना और निर्णय पर आधारित होते हैं। अतिथि वक्ता के तौर पर देवांश संगल जैन ने यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के करियर काउंसिलिंग और प्लेसमेंट सेल पाथवे की ओर से 7 नवम्बर को आयोजित कार्यशाला में कही।

कार्यशाला का विषय 'संचार लाभ विश्वास, स्पष्टता और प्रभाव कैसे बनाएं' रहा। उन्होंने युवा वर्ग को संघर्षपूर्ण दौर में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की सलाह दी। साथ ही सफलता प्राप्त करने में सक्रिय श्रवण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्मविश्वासपूर्ण अभिव्यक्ति के महत्व पर जोर दिया। उनका कहना था कि अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए अपने को तैयार करना होता है, यह बात आप सभी को समझनी होगी। इस मौके पर समिति के संयोजक डॉ. पवन शर्मा और समिति के अनेक पदाधिकारी समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

मंदिरों के चित्र प्राचीन जीवनशैली को दिखाते हैं

अंशु यादव

नई दिल्ली। मंथली लेक्चर सीरीज में इतिहास विभाग की समिति तवारिख ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 14 नवंबर 2025 को वक्ता सत्र का आयोजन किया। सत्र में शहरी दृश्य संस्कृति और अवकाश पर बात करते हुए वक्ता प्रो. सीमा बावा ने बताया कि भारत के अलग अलग कोने में स्थित मंदिरों की दीवारों पर अनेक चित्र देखने को मिलते हैं। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि पहले के लोग किस प्रकार अपना समय व्यतीत करते थे। खजुराहो, कोणार्क सूर्य, विरुपाक्ष मंदिर, भोरमदेव मंदिरों की चित्रकला को देखकर पता कर सकते हैं कि उस समय महिलाएं अपने मनोरंजन के लिए श्रृंगार, जल–पान के साथ मित्रों से मुलाकात व बातें करती थीं। इन चित्र कलाओं में कामसूत्र को भी दिखाया गया है।

प्रश्नोत्तरी सत्र के दौरान विद्यार्थियों ने पूछा कि कामसूत्र और फिजिकल डिजायर की बात करना पहले सामान्य था। वर्तमान समय में ऐसा क्या हुआ कि अब इस पर बात करना भी अच्छा नहीं माना जाता। प्रो. सीमा ने बताया कि प्राचीन काल में जब वर्ण व्यवस्था नहीं थी तब यह सामान्य था। जब वर्ण और जाति व्यवस्था आई तो अवकाश और आनंद ब्राह्मण और क्षत्रिय समाज के लिए माना जाने लगा। जिस वजह से धीरे–धीरे इस बात को सामान्य रुप से देखना लोगों ने बंद कर दिया। दूसरे विद्यार्थी ने पूछा कि जिस तरह महिलाओं के चित्र देखने को मिलते हैं वैसे पुरुषों के चित्र देखने को क्यों नहीं मिलते?

प्रो. सीमा ने बताया कि प्राचीन काल से ही महिलाओं को उनकी सुन्दरता और घर के कामकाज को लेकर देखा जाता है। पुरुषों को उनके नवाबी अंदाज और शानो–शौकत के लिए जाना जाता है। इसी कारण से सिर्फ महिलाओं के चित्र देखने को मिलते हैं। इस दौरान इतिहास विभाग की डॉ. शची मीणा ने समिति संयोजक डॉ. अरविंद, प्रभारी डॉ. पारुल गौर सहित सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों का धन्यवाद किया।

सही जवाब देने वालों को आटोग्राफ वाली किताब

आशीष कुमार राणा

नई दिल्ली। अंग्रेजी विभाग की द इंग्लिश लिटरेरी सोसायटी ने लेखक सत्र का रामलाल आनंद महाविद्यालय में 17 अक्टूबर 2025 को आयोजन किया। मुख्य अतिथि सुरभि गुप्ता रहीं, जिन्होंने आइरन ड्रॉप्ड इन सिल्क नामक किताब लिखी है। लेखिका ने महिला सशक्तीकरण क्यों आवश्यक है, इसका उद्देश्य क्या है, इन बिन्दुओं पर विद्यार्थियों के साथ चर्चा की।

अपनी किताब के पांचवें पेज में लिखी लाइन का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों से पूछा कि क्या कोमलता वास्तव में एक ताकत है। इसका सभी ने अपने तरीके से जवाब दिया। इस दौरान एक क्विज भी हुई, जिसमें जीतने वालों को लेखिका ने अपने ऑटोग्राफ वाली किताब भेंट की। शिक्षिका डॉ मीनाक्षी ब्रह्मा ने महिलाओं को मजबूत बनाने की इस पहल के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। इस मौके पर अंग्रेजी विभाग की शिक्षिका डॉ. उर्वशी कुहाड़ भी उपस्थित रहीं।

लक्ष्य पाकर विद्यार्थियों ने एंकरिंग में दिखाई प्रतिभा

साची यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की एंकरिंग समिति अंदाज ने तरंग 90.0 एफएम के साथ मिलकर 19 नवंबर 2025 को अंदाज–ए–बयां : एंकरिंग कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता ऑल इंडिया रेडियो की प्रोग्राम एग्जीक्यूटिव शालिनी मित्तल रहीं। उन्होंने प्रतिभागियों को पांच लक्ष्य क्राउड मैनेजमेंट, तकनीकी बाधा, शोर नियंत्रण, पुरस्कार वितरण और समारोह दिए। लक्ष्य के अनुसार प्रतिभागियों ने एंकरिंग की।



अंदाज समिति ने सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के साथ कार्यशाला आयोजित की।

विशेषज्ञ शालिनी मित्तल ने प्रतिभागियों को एंकरिंग के दौरान हुई गलतियों पर ध्यान केंद्रित करवाया। साथ ही मंच संचालन के विविध आयामों, ध्वनि के उतार–चढ़ाव, अभिव्यक्ति की स्पष्टता, शारीरिक भाषा, कैमरा व्यवहार, स्क्रिप्ट कला और कार्यक्रम के दौरान होने वाले व्यवधानों के बारे में जानकारी दी।

इस दौरान प्रतिभागियों ने वक्ता से एंकरिंग से संबंधित कई सवाल भी पूछे। महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के निदेशक प्रो. राकेश कुमार ने एंकरिंग के साथ रेडियो तरंग 90.0 एफएम से जुड़ने और सीखने को प्रोत्साहित किया। इसमें पटकथा लेखन से लेकर संपादन और प्रसारण तक के बारे में बताया। अंदाज समिति की संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार, संयोजक सुश्री दीपशिखा, हिंदी पत्रकारिता के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, तरंग की फरजीन सुलतान सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सामाजिक बदलाव के लिए वाद विवाद है जरूरी

दीपिका

नई दिल्ली। आप निर्णायकों की धारणा को दार्शनिकों, लेखकों और विचारकों का उद्धरण देकर नहीं जीत सकते। यह कार्य न करें। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी वाद विवाद समिति आरोह की टर्नकोट वाद विवाद प्रतियोगिता द्वंद्ववाक के निर्णायक वैभव सिंह ने कही। यह आयोजन 19 नवंबर 2025 को आयोजित हुआ।

समिति के संयोजक डॉ. अरविन्द पटेल ने कहा कि सिर्फ शौक और सीखने के लिए नहीं, सामाजिक बदलाव के लिए वाद विवाद करें। सरकार से अपनी उचित मांगों को पूरा करवाने के लिए वाद विवाद करें। इस एकदिवसीय प्रतियोगिता का विषय 'सदन का मत है कि लोग बदल जाते हैं, पर विचार वही रहते हैं। प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष, विपक्ष और अन्य में अपना विचार रखा। इसमें दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स के प्रतिभागी महेश ने प्रथम, वेंकटेश्वर के एकाग्र और हिन्दू कॉलेज के सुधांशु द्वितीय स्थान पर रहे।

अपनी संस्कृति बनाए रखें, दूसरों की अपनाएं

रामलाल आनंद महाविद्यालय में तीन दिवसीय वार्षिक महोत्सव स्पलेंडर

अंकुर सिंह

- **उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थियों से घुलें–मिलें : डॉ. रिकेन नामले**
- **नई सीमाओं को छूने को लालायित है महाविद्यालय : प्रो राकेश कुमार गुप्ता**

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए तीन दिवसीय वार्षिक महोत्सव स्प्लेंडर का शुभारंभ 23 मार्च 2026 को हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और मुख्य अतिथि डॉ. रिकेन नामले ने दीप प्रज्ज्वलित कर की। प्राचार्य ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से आए मुख्य अतिथि का स्वागत किया तो दस्तूर समिति की टोली ने सरस्वती वंदना पेश की। दिल्ली विवि के कुलगीत ने वातावरण को गौरवमयी बना दिया। वहीं राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान के गायन ने विद्यार्थियों में जोश भरने का काम किया।

मार्शल आर्ट, अभिनय और निर्देशन के क्षेत्र में काम करने वाले मुख्य अतिथि डॉ. रिकेन नामले ने अपनी अरुणाचल प्रदेश से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आने तक की यात्रा को साझा किया। इस यात्रा में उनके साथ किस तरह का व्यवहार किया गया, उसके बारे में बताया। साथ ही उत्तर–पूर्वी भारत की समृद्ध संस्कृति के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उत्तर–पूर्वी क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थी दूसरे इलाके के विद्यार्थियों से घुलें–मिलें। अपनी संस्कृति को बनाए रखने के साथ यहां की संस्कृति को स्वीकार करें। इंसानियत को सर्वोपरि रखने का संदेश देने के साथ उन्होंने युवाओं को अपनी जड़ों और ग्रामीण संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा दी।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने महाविद्यालय की शानदार उपलब्धियों का श्रेय शिक्षकों और विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत को देते हुए बताया कि महाविद्यालय ने इस वर्ष देश के टॉप 100 संस्थानों में जगह बनाई है। इसमें एनआईआरएफ रैंकिंग में 90वां स्थान और नेक का ए प्लस ग्रेड प्राप्त करना एक नया कीर्तिमान है। प्राचार्य ने आगामी वर्षों के लिए महाविद्यालय को टॉप 50 में लाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। आप सभी के प्रयासों से महाविद्यालय नई सीमाओं को छूने को लालायित है।

महोत्सव का आकर्षण समितियों की ओर से आयोजित प्रस्तुतियां रहीं। बेहतर आयोजन के लिए उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, कल्चर कमेटी संयो. जिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार, प्रो. संजय कुमार, प्रो. प्रदीप शर्मा, प्रो. अर्चना गौड़, छात्र संघ सलाहकार समिति के संयोजक डॉ. केजी त्यागी, सह संयोजक डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. प्रज्ञा देशमुख सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी और छात्र संघ पदाधिकारी मुस्तैद रहे।



अखिल सचदेवा ने जमाया रंग।



नार्थ ईस्ट सोसाइटी की ओर से आयोजित प्रतियोगिताओं में उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विद्यार्थियों ने खूब की भागीदारी।

अखिल सचदेवा के गीतों पर विद्यार्थियों ने की मस्ती

नई दिल्ली। स्पलेंडर के तीसरे दिन 25 मार्च को विभिन्न समितियों ने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान किया। इसकी शुरुआत निर्वाणा समिति की लयबद्ध योगासन प्रतियोगिता से हुई। ग्रासरूट् समिति ने बैटल ऑफ द बैंड्स थंडर नामक अंतर–महाविद्यालय बैंड प्रतियोगिता रखी। इल्यूजन समिति की पश्चिमी नृत्य प्रतियोगिता में बेहतरीन नृत्य देखने को मिला। नाटक समिति हसरतें की ओर से हुई प्रतियोगिता में विविध प्रस्तुतियां देखने को मिलीं।

अपरान्ह तीन बजते–बजते महाविद्यालय के विद्यार्थी सज–धज कर परिसर में आने लगे। इस समापन सत्र में प्रसिद्ध गायक अखिल सचदेवा की प्रस्तुति आकर्षण का केंद्र रही। उनके मंच पर आते ही विद्यार्थियों में जोश भर गया। उनके गीतों ने महाविद्यालय परिसर को संगीतमय बना दिया। विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने मिलकर अखिल के गीतों का आनंद लिया। छात्र संघ की ओर से आयोजित उत्सव में अध्यक्ष दीपांशु सिंह अपनी टीम के साथ लगे रहे। *रिपोर्ट : श्वेता सिंह*

आरएलएसी में कई राज्यों की संस्कृतियों के रंग दिखे

नई दिल्ली। दूसरे दिन का आगाज सांस्कृतिक कार्यक्रमों से हुआ। अनंतदृष्टि समिति की एकल शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता नृत्यदृष्टि में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। आरोह वाद विवाद की युवा संसद में लोगों की बहस देखते ही बनी। इनारा की पेंटिंग प्रतियोगिता में कलर के रंग देखने को मिले। पूरा आयोजन प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार और उनकी टीम की देखरेख में संपन्न हुआ। दृश्यम् समिति की ओर से फिल्म मेकिंग, दस्तूर इंडियन म्यूजिक सोसाइटी की स्वरमंजरी और स्वराधना में गायकी देखने को मिली। शाम होते सभी विद्यार्थी ग्राउंड की तरफ बढ़ने लगे। गिटार की आवाज ने सभी का ध्यान मंच की ओर खींचा। इसी बीच जोरदार संगीत के साथ शिवम चौहान मंच पर दिखाई दिए। उनके गानों ने विद्यार्थियों को झूमने पर मजबूर कर दिया। आयोजन सुचारू रूप से संपन्न हो, इसके लिए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान और उनकी पूरी टीम पल–पल की गतिविधियों पर नजर बनाए रही। *रिपोर्ट : आलोक यादव*

विद्यार्थियों ने पूरे किए टॉस्क

खुशबू साहू

नई दिल्ली । युवा वर्ग एंटरप्रेन्योरशिप की ओर तेजी से आकर्षित हो रहा है। इसमें प्रमुख रूप से बीएमएस और बीबीए के विद्यार्थी शामिल हैं। महाराष्ट्र में दो करोड़ व तेलंगाना में पांच–छह करोड़ की सरकारी फंडिंग मिलती है। एआई से कई कार्य सरल हो गए हैं। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय की इनैक्टस समिति की इको वर्स स्पर्धा में एंटरप्रेन्योरशिप विशेषज्ञ शुभजीत भट्टाचार्य ने सोशल एंटरप्रेन्योरशिप के बारे में बताते हुए कही। 11 नवंबर 2025 को हुए आयोजन में दी टाउन पजल नामक प्रतियोगिता हुई। इसे तीन चरणों ट्रेडिंग, गेम और ऑक्सन में बांटा गया। विद्यार्थी चार–चार के समूह में विभाजित किए गए। प्रत्येक समूह को एक वर्चुअल टाउन 1500 रुपए की शुरुआती राशि दी गई। संसाधन मुहैया कराए गए। इसकी मदद से विद्यार्थी ट्रेडिंग करना सीखे। साथ ही कुछ टास्क पूरे किए। इसी मौके पर समिति की संयोजिका रियांका जैन, समिति के पदाधिकारी समेत बड़ी संख्या मे विद्यार्थी उपस्थित रहे।



इनैक्टस के आयोजन में विशेषज्ञ ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए।

ध्यान लगाने से विद्यार्थी सपने पूरे कर सकते हैं

नंदनी

नई दिल्ली। अपने स्वास्थ्य को आजीवन बनाए रखने के लिए ध्यान लगाना जरूरी है। व्यक्ति को अपने जीवन में ध्यान लगाने एवं स्वास्थ्य को ठीक रखना चाहिए। यह बात गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय की डीन प्रो. श्वेता आनन्द ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 3 अक्टूबर 2025 को कही। गांधी स्टडी सर्कल की ओर से आयोजित आधुनिक युग में गांधीवादी और बौद्ध विचार पर प्रो. श्वेता आनंद ने कहा कि विद्यार्थियों को अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए ध्यान लगाना चाहिए। ध्यान लगाने से सपने को पूरा कर सकते हैं।

सत्र के दौरान गांधी स्टडी सर्कल के संयोजक राजेंद्र सिंह, डॉ. गोपाल कृष्ण त्यागी, डॉ. विजय भाटिया, डॉ. ऋतंभरा जैन, डॉ. प्रदीप कुमार एवं समिति के अध्यक्ष निष्का व बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैम्पस कनेक्ट के 30वें अंक के विमोचन पर प्राचार्य ने पूछा–

इंटर्नशिप करने की क्या तैयारी है...



कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के मासिक ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के अप्रैल 2026 अंक का विमोचन 4 जून को किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो राकेश कुमार गुप्ता ने अंक का विमोचन किया। अप्रैल अंक के संपादक हिंदी पत्रकारिता के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी दीपक कुमार ने विमोचन कराया। उनके साथ अंक की उपसंपादक खूशबू साहू भी मौजूद रहीं।

विमोचन के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अंक की जिम्मेदारी संभालने वाले दोनों विद्यार्थियों से सवाल किया कि परीक्षा के बाद आप लोग इंटर्नशिप करने जाएंगे या कुछ और योजना है। 'कैम्पस कनेक्ट' को आप किस सॉफ्टवेयर पर तैयार करते हैं। क्या इसी सॉफ्टवेयर पर समाचार पत्रों में काम होता है। इन सवालों का जवाब विद्यार्थियों ने अपनी समझ के अनुसार दिया।

एआई से घटेंगी नौकरियां तो अवसर भी मिलेंगे

एआई के कारण 90 लाख नौकरियां प्रभावित होंगी, पर इससे दोगुने रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे

भूमिका शार्दुल

- **आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस (एआई) स्किल्स और एप्रोचेज विषय पर कार्यशाला**
- **हिंदी पत्रकारिता के छात्र रहे अभिषेक पाराशर ने एआई की बारीकियां बताईं**

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के स्किल डेवलपमेंट सेंटर फॉर इन्फार्मेशनल टेक्नोलॉजी के अंतर्गत हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की हिंदी पत्रकारिता परिषद 'मिरात' ने 'आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस (एआई) स्किल्स और एप्रोचेज' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें विशेषज्ञ के तौर पर जागरण न्यू मीडिया के एसोसिएट एडिटर अभिषेक पाराशर ने हिस्सा लिया।



अभिषेक पाराशर, एसोसिएट एडिटर जागरण न्यू मीडिया

मिरात की ओर से 25 सितम्बर 2025 को हुई कार्यशाला में अभिषेक पाराशर ने कहा कि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की फ्यूचर ऑफ जॉब्स 2025 की रिपोर्ट कहती है कि एआई के कारण 90 लाख नौकरियां प्रभावित होंगी, पर इससे दोगुने रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि एआई का प्रयोग पूरी तरह उस पर निर्भर होकर नहीं, बल्कि सकारात्मक और संतुलित तरीके से करना चाहिए। एआई का सही प्रयोग विद्यार्थी कैसे करें, अभिषेक पाराशर ने उसके कमांड बताए। प्रैक्टिकल करके समझाते हुए पत्रकारिता ऐप्स के एआई की जानकारी प्रदान की। साथ ही कहा कि पत्रकारिता में सही से एआई का उपयोग किया जाए तो डाटा सम्मिलित करने में आसानी होती है। इससे पहले हिंदी पत्रकारिता विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने कहा कि बीज आगे चलकर पेड़ का आकार लेता है, उसी तरह अभिषेक पाराशर हमारे महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता की नींव रखने वाले विद्यार्थियों में शामिल हैं। वह पहले बैच के विद्यार्थी रहे हैं। मौजूदा समय में वह जागरण समूह में बड़े पद की जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

कार्यशाला के संचालन की जिम्मेदारी हिंदी पत्रकारिता की छात्रा खुशी और आस्था त्रिपाठी ने निभाई। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता की शिक्षिका डॉ. निशा सिंह, रेडियो तरंग की फरजीन सुल्तान सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

शिवम कुमार

संपादकीय सहयोग

खुशबू साहू